कामगारों ने 6 खानों को नवीनीकृत किए जाने की योजना प्रस्तुत की है। इन योजनाओं पर एक बैठक में विचार-विमर्श किया गया था जिसमें इन 6 खानों की कार्यकाल की अवधि को बढ़ाए जाने के संबंध में कुछ निर्णय लिए गए थे। इन निर्णयों की तथा इनके क्रियान्वयन की जिम्मेदारी वेस्टर्न कोलफील्ड्स लि० की है और सरकार की इस मामले में परोक्ष रूप से कोई भूमिका नहीं है।

कोल इंडिया लि० द्वारा वैगन क्षमता का उपयोग न कर पाने के संबंध में समाचार

5831. **श्रीमती सुषमा स्वराज:**
श्री राम जेठमलानी:

क्या कोयला मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार का ध्यान 27 फरवरी, 1995 के दैनिक आब्जर्वर में "सी०आई०एल० एक्यूजड ऑफ नॉट यूटीलाइजिंग वैगन कैपेसिटी" शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित समाचार की ओर दिलाया गया है;

(ख) यदि हां, तो क्या यह सच है कि कोयला लदान की समुचित व्यवस्था न होने के कारण रेलवे के वैगन बेकार पड़े हैं और वर्ष 1994-95 के दौरान कोल इंडिया लि० द्वारा निर्धारित मात्रा में कोयला ढोने के लक्ष्य को पूरा नहीं किया गया है;

(ग) यदि नहीं, तो इस संबंध में सरकार की क्या प्रतिक्रिया है;

(घ) क्या कोल इंडिया लि० और कोयला उद्योग में कार्यरत सरकारी क्षेत्र की अन्य संस्थानों द्वारा वर्ष 1994-95 के लिए कोयला भेजने के निर्धारित लक्ष्य को पूरा कर लिया गया है; और

(ङ) यदि नहीं, तो इसकी लक्ष्य मात्रा कितनी थी और वास्तव में कुल कितनी मात्रा में कोयला भेजा गया और 31 मार्च, 1995 की स्थिति के अनुसार कोयला खानों के मुहानों पर कोयले का कितना भंडार पड़ा था?

कोयला मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री अजित कुमार पांजा): (क) जी, हां।

(ख) और (ग) कोयला कंपनियों द्वारा कोयले का लदान रेल वैगनों से किए जाने के लिए उपयुक्त रूप में व्यवस्था कर दी गई है। वर्ष 1994-95 के दौरान कोल इंडिया लि० द्वारा वैगनों की दैनिक औसत पेशकश/मांग 17/398 चार पहियों वाले वैगन (एफ०डब्लू०डब्लू०) की थी, जबकि रेलवे ने केवल 17,053 चार पहिया वैगन आवंटित की थी। इसके अलावा, कोलियरियों पर वैगनों की औसत दैनिक आपूर्ति केवल 16,047 चार पहिया वैगन (एफ०डब्लू०डब्लू०) थी। वर्ष 1994-95 के बाद की छमाही के दौरान रेलवे द्वारा वैगनों की आपूर्ति में इच्छित स्तर तक वृद्धि नहीं हुई है। इसके परिणामस्वरूप कोयला कंपनी न केवल लदान की कमी को ही पूरा कर सकी, जोकि वर्ष 1994-95 की प्रथम छमाही में अधिक वर्षा के कारण हुई थी, बल्कि यह अपने लक्ष्यों को भी प्राप्त नहीं कर सकी।

(घ) और (ङ) को०ई०लि० से प्राप्त सूचना के अनुसार को०ई०लि० के अंतर्गत कोयला कंपनियों का वर्ष 1994-95 के लिए प्रेषण लक्ष्य 228.10 मि०टन था, जबकि इसकी तुलना में वास्तविक आपूर्ति 219.48 मि० टन की गई थी, लक्ष्य की तुलना में आपूर्ति लगभग 96.2% थी। पिटहैड को०ई०लि० के पास 31.3.1995 की स्थिति के अनुसार पिटहैड स्टाक 44.91 मि० टन (अनंतिम) होने की सूचना मिली है।

कोल इंडिया लिमिटेड का विक्रय लक्ष्य

5832. **श्रीमती सुषमा स्वराज:**
श्री राम जेठमलानी:

क्या कोयला मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि कोल इंडिया लिमिटेड द्वारा वर्ष 1994-95 के लिए कोयले की बिक्री का लक्ष्य निर्धारित किया गया था;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और कोल इंडिया लि० द्वारा निर्धारित किया गया लक्ष्य प्राप्त किया जा सका है;

(ग) यदि नहीं, तो वास्तव में कितनी मात्रा में कोयला भेजा जा सका था;

(घ) क्या यह भी सच है कि रेलवे के वैगनों का समय पर उपयोग न कर पाने के कारण कम्पनी को वर्ष 1994-95 के दौरान रेलवे को हर्जाने के रूप में धनराशि का भुगतान करना पड़ा था; और

(ङ) यदि हां, तो वर्ष भर में कुल कितने रेलवे वैगनों की मांग की गई और कितने वैगन उपयोग में लाए गए तथा उक्त अवधि में कितने वैगनों का उपयोग न कर पाने हेतु हर्जाना देना पड़ा था?

कोयला मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री अजित कुमार पांजा): (क) से (ग) कोल इंडिया लि० (को०इं०लि०) से प्राप्त सूचना के अनुसार वर्ष 1994-95 के लिए 228.10 मि० टन के प्रेषण लक्ष्य की तुलना में वास्तविक उपलब्धि 219.48 मि० टन (अनंतिम) थी। यह लक्ष्य के 96.2% होने का अनुमान लगाया गया है।

(घ) रेलवे द्वारा क्षति प्रभार लगाए जाते हैं जबकि उनके द्वारा निर्धारित लदान की छूट की समयावधि में लदान का कार्य पूरा नहीं किया जाता है। को०इं०लि० के अनुसार ऐसा विलम्ब वैगनों के लदान के कुछ मामलों में भारी वर्षा के कारण हुई अव्यवस्था, खुली वैगनों के स्थान पर ढके वैगनों की आपूर्ति, रात्रि के देरी के घंटों में वैगनों की प्रतिस्थापना, विद्युत की विफलता और लदान को प्रभावित करने वाले अन्य खराबी के कारण होता है।

(ङ) वर्ष 1994-95 के दौरान रेलवे द्वारा 16047 चार पहिया वैगन (एफ०डब्लू०डब्लू०) दैनिक औसत वैगनों की आपूर्ति की गई, जबकि दैनिक औसत लदान 15,937 एफ०डब्लू०डब्लू० वैगनों का किया गया। वैगनों औसत दैनिक बकाया 4193 एफ०डब्लू०डब्लू० था। को०इं०लि० ने यह उल्लेख किया है कि किसी दिन विशेष को दर्शायी गई बकाया वैगनों को वास्तव में, रेलवे द्वारा निर्धारित लदान की छूट की अवधि के बाद, लदान तथा प्रेषण के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

वर्ष 1995-96 के दौरान कोयला उत्पादन का लक्ष्य

5833. **श्री जनेश्वर मिश्र:** क्या कोयला मंत्री 24 अप्रैल, 1995 को राज्य सभा में अतारांकित प्रश्न 3083 के दिए गए उत्तर को देखेंगे और यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) वर्ष 1995-96 के दौरान कोयला उत्पादन का लक्ष्य कितना है;

(ख) क्या सरकार ने कोयले को गुणवत्ता सुधारने के लिए कोई उपाय किए हैं; और

(ग) यदि हां, तो इस संबंध में ब्यौरा क्या है?

कोयला मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री अजित कुमार पांजा): (क) वर्ष 1995-96 के लिए कोयले का अखिल भारतीय लक्ष्य 274.50 मि० टन रखा गया है।

(ख) और (ग) कोयले की गुणवत्ता में सुधार किए जाने के लिए कोयला कम्पनियों द्वारा निम्नलिखित उपाय किए गए हैं/उपाय किए जा रहे हैं:—

(1) कोयले का उत्पादन करते समय चयनकृत खनन तथा साफ बेंच अनुरक्षण किया जाना।

(2) फीडर ब्रेकरों की तथा कोयला रख-रखाव संयंत्रों की स्थापना की एक कार्रवाई योजना क्रियान्वित की जा रही है।

(3) कोयले के लदान स्थल पर पत्थरों को अलग किया जाना।

(4) जहां कहीं भी व्यवहार्य होता है, श्रमिक द्वारा कंकड़ तथा पत्थरों को चुनने के लिए कोयले के संयंत्रों में धीमी गति की बेल्ट लगाई जा रही है।

(5) लदान के समय कोयले की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए और कामगारों, पर्यवेक्षकों तथा रेल साइडिंग के अधिकारी में गुणवत्ता संबंधी जागरुकता पैदा करने के लिए बेहतर पर्यवेक्षण करने के लिए सुनिश्चय किया जा रहा है।

(6) प्रेषित किए गए कोयले की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए लदान के समय उपभोक्ताओं के प्रतिनिधि तैनात करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

(7) विद्यमान कोकर कोयला वाशरियों के आधुनिकीकरण तथा संशोधन को त्वरित रूप में पूरा किया जाना।